



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 156]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 25, 2003/आषाढ़ 4, 1925

No. 156]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 25, 2003/ASADHA 4, 1925

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

सार्वजनिक सूचना

नई दिल्ली, 25 जून, 2003

सं. 14/(आर ई-03) 2002—2007

फा. सं. 01/94/180/18/ए एम 04/पी सी-IV.—निर्यात और आयात नीति, 2002—2007 के पैरा 2.4 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, महानिदेशक, विदेश व्यापार एतद्वारा प्रक्रिया पुस्तक (खण्ड-1) में निम्नलिखित संशोधन करते हैं :—

1. पैराग्राफ 2.9.5 की तरफ ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिसमें आयातक/निर्यातक द्वारा आवश्यक विवरण वेबसाइट www.nic.in/eximpol के जरिये आनलाईन प्रस्तुत करना निर्धारित किया गया है। तदनुसार, “आई ई सी (ट्रेड रिटर्न)” इंडेक्स के अधीन वेबसाइट पर एक फार्मेट डाल दिया गया है ताकि आई ई सी धारक कम्प्यूटर के अनुरूप फार्मेट में विवरण प्रस्तुत कर सकें। “आई ई सी (ट्रेड रिटर्न हेल्प)” इंडेक्स के अधीन एक सहायता मीनू भी उपलब्ध है। आई ई सी के कालमों में अपेक्षित सूचनाओं के स्पष्टीकरण के लिए कई अनुरोध प्राप्त हुए हैं। तदनुसार, विभिन्न कालमों में, अपेक्षित सूचनाओं को स्पष्ट करने का निर्णय निम्नवत् लिया गया है:-

वर्ष 2002-2003 में अमेरिकन डालर में अर्जित विदेशी मुद्रा

विनिर्मित माल का पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य : इस कालम में आई ई सी धारक को उसके द्वारा विनिर्मित माल के संबंध में निर्यात का पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य बताना होगा।

अविनिर्मित माल का पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य : इस कालम में, आई ई सी धारक को, उसके द्वारा प्राप्त किये गये माल (मूलतः वे माल जिसका उसने व्यापार किया है) के संबंध में निर्यात का पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य बताना होगा।

निर्यात के अतिरिक्त : इस कालम में, आई ई सी धारक को, उसके द्वारा विदेशों में दी गयी सेवाओं के संबंध में विदेशी मुद्रा अर्जन का विवरण देना होगा।

यदि निर्यात अमेरिकन डालर के अलावा किसी अन्य मुद्रा में किया गया है तो इसे भारतीय रुपये में परिवर्तित किया जा सकता है तथा उसके बाद अमेरिकन डालर और भारतीय रुपये के बीच 31 मार्च, 2003 को प्रभावी वित्त मंत्रालय की विनियमन दर के अनुसार अमेरिकन डालर में परिवर्तित किया जा सकता है (1 अमेरिकन डालर = 47.55 रु०)। तदनुसार, 47.55 रुपये प्रति अमेरिकन डालर के विनियमन दर से रुपये के मूल्य को अमेरिकन डालर में परिवर्तित किया जा सकता है।

आपके निर्यात के क्रम में 1 से 9 रैंक : निर्यातक को विभिन्न उत्पाद समूह को मूल्य के रूप में रैंक देना होगा। उदाहरण के लिए, यदि कोई निर्यातक रसायन, वस्त्र और इंजिनियरी का क्रमशः 1,00,000, 2,00,000 और 5,00,000 अमेरिकन डालर का निर्यात करता है तो उसे इंजिनियरी के मदे 1, वस्त्र के मदे 2 और रसायन के मदे 3 अंक लिखना होगा। वे क्षेत्र जिन्हें विशेष तौर से शामिल नहीं किया गया है जैसे, चमड़ा, प्लास्टिक, उन्हें 'अन्य' शीर्ष के अन्तर्गत शामिल किया जा सकता है।

आपके निर्यात के क्रम में 1 से 6 रैंक : इस कालम में मूलतः महाद्वीप शामिल हैं। एशिया महाद्वीप के देशों को किये गये सभी निर्यातों को 'एशिया' कालम में दर्शाया जायेगा। इसी प्रकार अफ्रीकी महाद्वीप के सभी देशों को किये गये निर्यात को 'अफ्रीका' कालम में दर्शाया जायेगा। विभिन्न महाद्वीपों में निर्यातों के पोत पर्यन्त निःशुल्क मूल्य पर आधारित, इस कालम में भी निर्यातक उसी तरह रैंक देगा जैसे कि निर्यात के क्रम कालम में रैंक दिया गया है।

आयातों का लागत बीमा भाड़ा मूल्य (2002-03) अमेरिकी डालर के समतुल्य : इस कालम में, 1.4.2002 से 31.3.2003 के बीच दर्ज की गयी आगम बिल के अनुसार, कुल लागत बीमा भाड़ा मूल्य को दर्शाना होगा। यहाँ भी, भारतीय रुपये को, अमेरिकी डालर और भारतीय रुपये के बीच 31 मार्च, 2003 को प्रभावी वित्त मंत्रालय की विनियमन दर के अनुसार, अमेरिकी डालर में परिवर्तित किया जा सकता है (1 अमेरिकन डालर = 47.55 रु०)। तदनुसार 47.55 रुपये प्रति अमेरिकी डालर की विनियमन दर से, रुपये के मूल्य को अमेरिकी डालर में परिवर्तित किया जा सकता है।

2. तथापि, जो आई ई सी धारक आई ई सी रिटर्न पहले फाइल कर चुके हैं, उन्हें उपर्युक्त मार्गनिर्देशों के अनुसार आई ई सी रिटर्न पुनः फाइल करने की आवश्यकता नहीं है।

3. पैराग्राफ 2.9.5 में आंशिक संशोधन करते हुए रिटर्न फाइल करने की अंतिम तारीख को संशोधित करके "30 जून के बजाय 31 अक्टूबर" पढ़ा जाएगा। तदनुसार, पैराग्राफ 2.9.5 संशोधित करके इस प्रकार पढ़ा जाएगा :-

प्रत्येक आई ई सी धारक (उनको छोड़कर जिन्होंने आई ई सी पिछले लाइसेंसिंग वर्ष अर्थात् 1.4.2002 से 31.3.2003 तक प्राप्त कर लिया था) को 31 अक्टूबर, तक पिछले लाइसेंसिंग वर्ष में उसके द्वारा किए गए आयात/निर्यात का वार्षिक ब्यौरा प्रस्तुत करना होगा। आई ई सी धारक द्वारा सूचना www.nic.in/eximpol वेबसाइट के माध्यम से आन लाइन देनी होगी। निर्धारित समय के भीतर ब्यौरा प्रस्तुत करने में असफल रहने पर 1 नवम्बर से आयात/निर्यात प्रयोजन के लिए ऐसे आई ई सी को ब्लाक कर दिया जाएगा।

जिन मामलों में आई ई सी धारक ने पिछले वर्ष कोई आयात/निर्यात नहीं किया है ऐसे आई ई सी को 1 नवम्बर से निष्क्रिय कर दिया जाएगा। उन सभी आई ई सी को निष्क्रिय कर दिया जाएगा जहाँ धारक निर्धारित अवधि के भीतर विवरण प्रस्तुत करने में असफल रहता है और अपेक्षित डाटा प्रस्तुत करने पर तथा क्षेत्रीय लाइसेंसिंग प्राधिकारी को ट्रेजरी चलान या डिमाण्ड ड्राफ्ट द्वारा 500 रुपये का शुल्क जमा करने पर उन्हें फिर से सक्रिय किया जा सकता है। इसी प्रकार, आई ई सी के संबंध में जहाँ कोई आयात/निर्यात नहीं किया गया है, क्षेत्रीय लाइसेंसिंग प्राधिकारी को ट्रेजरी चलान या डिमाण्ड ड्राफ्ट द्वारा 500 रुपये का शुल्क जमा करके निष्क्रिय आई ई सी को सक्रिय करवाया जा सकता है।

इसे लोकहित में जारी किया जाता है।

एल. मानसिंह, महानिदेशक, विदेश व्यापार

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

PUBLIC NOTICE

New Delhi, the 25th June, 2003

No. 14/(RE-03) 2002—2007

F. No. 01/94/180/18/AM 04/PC-IV.—In exercise of powers conferred under paragraph 2.4 of the Export and Import Policy, 2002—2007, the Director General of Foreign Trade hereby makes the following amendment in the Handbook of Procedures (Vol.-1):

1. Attention is invited to paragraph 2.9.5 prescribing mandatory returns to be submitted by importer/exporter online by accessing the website at www.nic.in/eximpol. Accordingly, a format has been placed on the website under the Index "IEC (Trade Return)" to enable IEC holder to furnish the return in a computer compatible format. A help menu is also available under the index "IEC (Trade Return Help)". A number of requests have been received for clarifying the information sought in columns of IEC. Accordingly, it has been decided to clarify the information sought in the various columns as under:-

Foreign exchange earned 2002-03 in US\$.

FOB of goods manufactured: In this column, the IEC holder is required to give the FOB value of exports in respect of goods manufactured by him.

FOB of goods not manufactured: In this column, the IEC holder is required to give the FOB value of exports in respect of goods procured by him (basically the goods which are traded by him).

Other than exports: In this column, the IEC holder is required to give details of foreign exchange earning in respect of any services rendered by him abroad.

If the exports are in currency other than US\$, the same may be converted into Indian rupees and thereafter may be converted into US\$ as per exchange rate of Ministry of Finance between US\$ and Indian rupees on 31st March, 2003. (1US\$ = Rs.47.55). Accordingly, the rupee value may be converted into US\$ at the exchange rate of Rs.47.55/- per US\$.

Rank 1 to 9 in order of your export:- The exporter is required to rank different product group in terms of their ranking in value terms. For example, if an exporter is having an export of chemicals, textile and engineering of US\$1,00,000, 2,00,000 and 5,00,000 respectively. He has to put a figure of 1 against engineering, 2 against textile and 3 against chemicals. In respect of the sectors which are not specifically covered i.e leather, plastic, they may be covered under the heading 'Others'.

Rank 1 to 6 in order of your exports: This column basically covers continents. All exports made to countries in Asian continent will be reflected in the column 'Asia'. Similarly, exports to all African continent countries will be reflected in 'Africa'. In this column also, based on FOB value of exports in different continents, ranking has to be done by the exporter in the similar way as in the column for the ranking in order of export.

CIF value of imports (2002-03) in equivalent US\$:- In this column, the total CIF value as per Bill of entry filed between 1.4.2002 to 31.3.2003 needs to be reflected. Here also, the Indian rupees may be converted into US\$ as per the exchange rate of Ministry of Finance between US\$ and Indian rupees on 31st March, 2003. (1US\$ = Rs.47.55). Accordingly, the rupee value may be converted into US\$ at the exchange rate of Rs.47.55/- per US\$.

2. However, all those IEC holders who have already filed IEC return need not file again as per the aforesaid guidelines.

3. In partial modification of paragraph 2.9.5, the last date for filing the return shall be amended to read as " 31st October " instead of "30th June". Accordingly, paragraph 2.9.5 shall be amended as under:-

Each IEC holder (barring those who have obtained IEC in the preceding licensing years i.e 1.4.2002 to 31.3.2003) shall be required to furnish yearly details of imports/exports made by him in the preceding licensing year by 31st October. The information shall be furnished online by the IEC holder by accessing the website at www.nic.in/exlmpol. Failure to submit the details by the stipulated period shall result in blocking of such IEC for import/export purposes from 1st November.

In cases where the IEC holder has not made any import/ export in the preceding licensing year, such IEC shall be made inoperative from 1st of November. All those IEC where the holder fails to furnish the details by the stipulated time, shall be de-activated which may be re-activated upon furnishing a fee of Rs.500/- by way of demand draft or treasury challan to the Regional Licensing Authority and submitting the requisite data. Similarly, in respect of IEC where no import/export has taken place, deactivated IEC can be reactivated on furnishing a fee of Rs. 500/- by way of demand draft or treasury challan to the Regional Licensing Authority.

This issues in public interest.

L. MANSINGH, Director General of Foreign Trade